श्री जगायवेके पद॥

श्रीकृष्णायनमः श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥ श्रीयमुनामहाराणीमातायनमः॥ श्रीमद्वल्लभाचार्यायनमः॥ श्रीगुसांईजीपरमदयालवेनमः॥ श्रीगुरुदेवकीनंदनाचार्यायनमः॥

अथश्रीजगायवेके पद॥ ॥रागभैरव॥

ललितलाल श्रीगोपाल सीइयेन प्रातकाल यशोदामैया लेत बलैया भोर भयो बारे॥ उठो देव करूं सेव जागिये देवाधिदेव नंदराय दुहत गाय पीजिये पय प्यारे॥१॥ रविकी किरण प्रकट भई उठो लाल निशा गई दहीं मथत जहां तहां गावत गुण तिहारे॥ नंदकुमार उठे विहस कृपादृष्टि सबपें वरष युगल कमलन चरणपूर परमानंद वारे ॥२॥ ॥१॥

जागिये गोपाललाल जननी बलजाई॥ उठो तात प्रात भयो रजनीको तिमिर गयो टेरत सब ग्वालबाल मोहना कन्हाई॥१॥ उठो मेरे आनंद कंद गगन चंद मंद भयो प्रकटयो अंशुमान भानु कमलन सुखदाई॥ सखा सब पूरत वेणु तुम विना न छूटे धेनु उठो लाल तजो सेन सुंदर वरराई॥२॥ मुखतें पट दूर कियो यशोदाको दरश दियो ओर दधि माग लियो विविध रस

www.vallabhacharyakripa.org

॥ श्रीकलेऊकेपद॥

मिठाई॥ जेवत दोऊ राम श्याम सकल मंगल गुण
निधान थारमेंकछू जूठ रही मानदासपाई ॥३॥२॥

॥अथ कलेऊके पद॥ ॥राग बिभास॥

कमलनयन हरि करो कलेवा॥ माखन रोटी सद्य
जम्यो दधि भांतभांतके मेवा॥१॥ खारक द्राख
चिरोंजी किशमिस उज्वल गरीय बदाम॥ सक्कर
सेव छुहारे सिंघारे हरे खरबुजा जाम॥२॥ कीए
मेवा बहु भांतभांतके खटरसके मिष्टान॥ सूरदास
प्रभु करत कलेऊ रीझे स्याम सुजान॥३॥ ३॥

॥ राग रामकली॥

कीजिये नंदलाल कलेऊ॥ खीर खांड और माखन
मिश्री लीजिये परम रसाल॥१॥ ओटयो
दूध सद्य धोरीको तुमकों देहों गोपाल॥ बेनी बढें
होय बलकीसी पीजिये मेरे बाल॥२॥ हों
वारी या वदन कमल पर चुंबन देहो गाल॥ गोविंद
प्रभु कलेउ कीनो जननी वचन प्रतिपाल॥४॥
॥४॥

॥श्री मंगला आरतीके पद . ॥भैरव

॥अथ मंगला आरतीके पद॥ ॥~~बिभास~~॥

मंगल आरती गोपालकी माई॥ नित्य प्रति मंगल
होत निरख मुख चितवन नयन विशालकी॥१॥ मंगल रूप स्याम सुंदरको
मंगल भृकुटी सुभालकी॥ चतुर्भुज प्रभु सदा
मंगल निधि बानिक गिरिधरलालकी॥
॥२॥ ॥५॥

सब विध मंगल नंदको लाल॥ कमलनयन
बल जाय यशोदा न्हात खिजो जिन
मेरे बाल॥१॥ मंगल गावत मंगल मूरती
मंगल लीला ललित गोपाल॥ मंगल
व्रजवासिनके घर घर नाचत गावत दे
कर ताल॥२॥ मंगल वृंदावनके रंजन
मंगल मुरली शब्द रसाल॥ मंगल यश
गावे परमानंद सखा मंडली मध्य गोपाल
॥३॥ ॥६॥

॥ राग बिलावल॥

मंगल आरती कर मन मोर॥ भरम निशा
बीती भयो भोर॥१॥ मंगल बाजत झाल
करताल॥ मंगल रूप उठे नंदलाल॥२॥

॥ श्रीमं॰आ॰॥ श्रीन्हवायवेकेपद ॥

मंगल धूप दिप कर जोर ॥ मंगल सब विधि गावत होर ॥३॥ मंगल उदयो मंगल रास ॥ मंगल बल परमानंददास ॥४॥ ७॥

व्रज मंगलकी मंगल आरती ॥ बहु बिध रत्नजटित कनक थार भरे ता मध्य जरत कपूरकी लेले वारती ॥१॥ लेत बलाय करत न्योंछावर तन मन प्रान वारने वारती ॥ दास रस भरी यशोदा मगन भई आप आपनपो न संभारती ॥२॥ ८॥

॥अथ न्हवायवेकेपद ॥ ॥राग देवगंधार॥

मंजन करत गोपाल चौकी पर ॥ अति सुगंध फुलेल उबटनो विविध भांतकी सोंझ राखी धर ॥१॥ प्रथम न्हवाय फिर केसर चर्चत शोभित अंग अंग सुंदरवर ॥ व्रजगोपी सब मिल गावत हैं अंग उबट कर परस्स सीसकर ॥२॥ विविध भांत शृंगार करत हैं अपनी अपनी रुचि सुघरवर ॥ ले दर्पण श्रीमुखहि दिखावत

॥न्ह॰के॥ श्रीमंगला समयकेपद ॥

निरख निरख नयन हंसे हर ॥ ३ ॥ भांत भांत सामग्री करकर ले आई सब घर घर ॥ छीतस्वामी गिरिधरन आरोगत अति आनंद प्रफुल्लितकर ॥४॥९॥

करत शृंगार मैया मन भावत ॥ सीतल जल उष्ण कर राख्यो ले लालनको बैठ न्हवावत ॥१॥ अंग अंगोछ चौकी बैठारत प्रथमही ले तनिया पहरावत ॥ देखो मेरे लाल और सब बालक घर घरतें कैसे बन आवत ॥२॥ पहरो लाल झगा अति सुंदर आंख आंजके तिलक बनावत ॥ सूरदास प्रभु खेलत आंगन लेत बलैया मोद बढावत ॥३॥ ॥ १० ॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीमंगला समयके पद ॥ राग भैरव ॥

स्मरो नटनागर वर सुंदर गोपाललाल ॥ सब दुःख मिट जैहें वे चिंतित लोचन विशाल ॥१॥ अलकनकी झलकन। लख पलकन गति भूल जात। भ्रुवविलास। मंद हास। रदन छदन अति रसाल ॥ निंदित रवि कुंडल छबि गंड

॥श्री मंगला समयके पद॥

मुकुर झलमलात। पिच्छ गुच्छ कृत अवतंस। इंदु विमल बिंदु भाल॥२॥ अंग अंग जीत अनंग। माधुरी तरंग रंग। विमद मद गयंद होत। देखत लटकीली चाल॥ हसन लसन पीत वसन। चारु हार वर शृंगार। तुलसी रचित। कुसुम खचित। पीन उर नवीन माल॥ ३॥ व्रजनरेश वंशदीप। श्रीवृंदावनवर महीप। श्रीवृषभान मान पात्र। सहज दीन जन दयाल॥ रसिक भूप रूप रास गुणनिधान जान। राय। गदाधर प्रभु युवतीजन मुनि मन मानस मराल॥ ४॥ ॥११॥

॥राग रामकली॥

जयति श्रीराधिके। सकल सुख साधिके। तरुणि मणि नित्य नौतन किशोरी॥ कृष्ण तन नीलवन रूपकी चातकी। कृष्ण मुख हिम किरणकी चकोरी॥ १॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी। कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी॥ कृष्ण अनुराग मकरंदकी मधुकरी। कृष्ण गुण गान रस सिंधु बोरी॥२॥ परम अद्भुत अलौकिक मेरी गति। लख मनसि सांवरे रंग अंग गोरी॥ और आश्चर्य में कहूं न देख्यो सुन्यो। चतुर चौसठ

॥श्री मं॰के॥ श्रीखंडिताके पद॥

कला तदपि भोरी॥ ३॥ बिमुख पर चित्त ते। चित्त याको सदा करत। निज नाहकी चित्तचोरी॥ प्रकृत यह गदाधर। कहत कैसे बने। अमित महिमा। इते बुद्धि थोरी॥ ४॥ ॥१२॥

॥अथ श्रीखंडिताके पद॥ ॥राग ललित॥

कब देख्यो मेरी ओर। नागर नंदकिशोर। बिनती करत भयो भोर॥ हम चितवत। तुम चितवत नाहीं। मेरे करम कठोर॥ १॥ जन्म जन्मकी दासी तिहारी। तापर इतनो जोर॥ सूरदास प्रभु तुम्हारे रोम पर वारों कंचन खोर॥ २॥ ॥१३॥

राग ललित

रंग रसिक नंदनंदन रंग रसिक भामिनी मृगनयनी कमलनयन नागर नागरी॥ गिरिधर कल हंस हंसनी मानो गोपतरणि दोऊ समतूल. गुणन सागर सागरी॥ १॥ करव केलि बन विहार निरख जोटि लजत मार गावत स्वर मिलवत चारु ललित रागरी॥ खग मृग पशु सुनत नाद पीवत अधर सुधा

॥ श्रीवसंतकी बहारके पद ॥

स्वाद कृष्णदास वदतवाद सुफलभागरी ॥२॥
॥१४॥

॥ अथवसंतकी बहारके पद ॥ राग मालकौंस ॥

बालापन गयो अब आयो जोबन रोमरोम प्रफुल्लित
तन ॥ मदन नृपतिकी फोज आवत सखि
भयो हुल्लास युवतिन मन ॥ १ ॥ ठोर ठोर फूले
द्रुम कानन कोकिल लागे कुल्लाहल करन ॥
कामीजन उरदाह करनकों सेना सज आये
लरन ॥ २ ॥ भरो चलो प्यारी अपनें प्रीतमकों
धरो आयुध आभरण ॥ समर संग्राम
जीतेंगे सूर प्रभु चाहत तिहारी शरण ॥३॥
॥१५॥

॥ राग भैरव ॥

सघन वन छायो प्रफुल्लित द्रुम बेली भयो हुलास
व्रजजन मन ॥ ठोर ठोर कोकिल कल कूजत
करत गुंजार मधुपगन ॥१॥ भयो प्रकट
आज ऋतुराज वास कीयो सुनियत वृंदावन॥
रसिक प्रीतम पियसों रस विलसों आन
अर्पो सखि तन मन धन ॥२॥ ॥१६॥

॥ श्रीव्रतचर्याके पद ॥

॥ अथश्रीव्रतचर्याके पद ॥ राग रामकली ॥

हरि यश गावत चली व्रजसुंदरी नदी यमुनाके
तीर ॥ लोचन लोल बांह जोटी कर श्रवणन झलकत
बीर ॥ १ ॥ बेनी शिथिल चारु कांधे पर कटि पट
अंबर लाल ॥ हाथन लियें फूलनकी डलियां उर
मुक्तामणिमाल ॥ २ ॥ जल प्रवेश कर मज्जन लागी
प्रथमहेमंतके मास ॥ जेसें प्रीतम होय नंदसुत व्रत
मान्यो यह आस ॥ ३ ॥ तबते चीर हेरे नंदनंदन चढे
कदंबकी डारी ॥ परमानंद प्रभुवर देवेकों उद्यम
कीयो हे मुरारि ॥ ४ ॥ ॥१७॥ ॥ ॥

हमारो देहो मनोहर चीर ॥ कांपत दशन सीत तन
व्यापत हिम अति यमुनानीर ॥ १ ॥ मानोंगी उपकार
रावरो करहु कृपा बलबीर ॥ अति दुखत वपु परसत
मोहन प्रचंड समीर ॥ २ ॥ हम दासी तुम नाथ हमारे
विनती करत जल भीतर ठाढी ॥ मानो विकसि कुमुदिनि
शशिसों अधिक प्रीति बाढी ॥ ३ ॥ जो तुम हमहीं
नाथ कर मानो यह मागें हम देहु ॥ जलतें निकसि
आय बाहिर व्हे वसन आपुने लेहु ॥ ४ ॥ कर
धर शिस गई सन्मुख हरि मनमें कर आनंद ॥

www.vallabhacharyakripa.org

होय कृपाल सूर प्रभु सब बिध अंबर दीने नंदनंद॥८॥

॥१८॥

॥अथ श्रीहिलगके पद॥ राग आसावरी॥

जाको मन लाग्यो गोपालसों ताहि और कैसें भावे हो॥ लेकर मीन दूधमें राखो जल विन सचु नहीं पावे हो॥ १ ॥ ज्यों शूरा रण घूम चलत हें पीर न काहू जनावे॥ जो गूंगो गुर खाय रहत हें सुखस्वाद नहीं बतावे॥ २॥ जैसें सरिता मिली सिंधुमें उलट प्रवाह न आवे॥ जैसें सूर कमल मुख निरखत चित्त इत उत न डुलावे॥३॥

॥१९॥

॥राग बिलावल॥

मेरो मन गोविंदसों मान्यों तातें और न जियभावे॥ जागत सोवत यह उत्कंठा कोऊ व्रजनाथ मिलावे ॥१॥ बाढी प्रीति आन उर अंतर चरण कमल चित्त दीनो॥ कृष्ण विरह गोकुलकी गोपी घरहीमें वन कीनो॥२॥ छांड अहार विहार सुख देह और न चाहत काऊ॥ परमानंद वसत हैं घरमें जैसें रहत बटाऊ॥ ३ ॥ ॥२०॥

॥राग रामकली॥

जोपें चोपं मिलनकी होय॥ तो क्यों रह्यो परे विन देखे लाख करो जिन कोय॥ १॥ जोपें विरह परस्पर व्यापे तो कछु जिये बने॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा एको चित्त न गिने॥२॥ कुंभनदास जाहि तन लागी और ना कछु सुहाय॥ गिरिधरलाल तोही विन देखे पल छिन कल्प विहाय ॥३॥ ॥२१॥

हली हिलगकी पहिचान॥ जोपें हिलग हियेमें होती तो कहा करे कुलकान॥१॥ हिलग करि ज्यों पतंग दीपकसों तनसों प्यो है आन॥ शंक तनहीं जरत ज्वालामें सही प्राणकी हान॥२॥ हिलग करी ज्यों चकोर चंदसों पावक चुगत जु जान॥ ऐसेंही कुरंग नाद मृदु मोहे हने पाराधी बान हिलग नहींसों बधें सबे त्यज मधुप कमल हीत जान॥ ऐसी हिलग लाल गिरिधरसों सूरदास पहिचान.॥४॥ ॥ २२ ॥

॥अथ श्रीदधिमथनकेपद॥ राग बिलावल॥

नंदगाम नीको लागतरी॥ प्रातसमे दधि मथत ग्वालिनी
सुनत मधुर ध्वनि गाजतरी॥१॥ धन्य
ये गोपी धन्य ये ग्वाल जिनके मोहन उर लागतरी॥
हलधर संग ग्वाल सब राजत गिरिधर
ले ले दधि भागतरी॥२॥ जहां वसत सुर देव
महामुनि एको पल नहीं त्यागतरी॥ नंददास
कों यह कृपा फल गिरिधर देखे मनजागतरी॥३॥

॥२३॥

आनंदसों दधि मथति यशोदा कनकमथनियां घूमें॥
नृत्यत कान्ह ललित लोचन पग धरत अटपटे भूमें॥
॥१॥ चारु चकोडा मध्य कुटिल कचश्याम मुक्ता ताहूमें॥
मानो मकरंद बिंदु ले मधुकर सुत हित प्यावत
झूमें॥२॥ बोलत स्याम तोतरी बानियां हसहस
दतियां दूमें॥ सूर सर्वस्व वारें छबिपर जननी
कमलमुख चूमें॥३॥ ॥२४॥

॥अथ श्रीशृंगारके पद॥ राग बिलावल॥

आवो गोपाल शृंगार बनाऊं॥ विविध सुगंधन करीं
उबटनों पाछें उष्ण जल ले जु न्हवाऊं॥१॥

अंग अंगोछ गुहूं तेरी बेनी फूलन रुचरुच माल
बनाऊं॥ सुरंग पाग जरतारी तोरा रत्नखचित
शिर पेच बंधाऊं॥२॥ वागो लाल सुनेरी छापो
हरी इजार चरण नपि रचाऊं॥ पटुका सरस बैंजनी
रंगको हसली हारहू मेल बनाऊं॥३॥
गजमोतिनके हार मनोहर वनमाला ले उर पहेराऊं॥
ले दर्पण देखो मेरे प्यारे निरख निरख उर
नयन सिराऊं॥४॥ मधु मेवा पकवान मीठाई अपने
कर ले तुम्हे जिवाऊं॥ विष्णुदासकों यह कृपा
फल बाललीला हौं निशदिन गाऊं॥५॥ २५॥

आजको शृंगार सुभग सांवरे गोपाल जूको कहत
न बन आवें देखें ही बन आवें॥ भूषण वसन भांतभांत
अंग अंग छबि कहीन जात लटपटी सुदेश पाग
चित्तकों चुरावें॥१॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तुरी
अति रसाल चितवन लोचन विशाल
कोटि काम लजावें॥ कंठसरी वनमाल फेंटा कटि
छोरन छबि निरखत त्रिभुवन त्रिया धीर न
मन लावें॥२॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि
कुंज द्वार हितकी चित्त बात कहूं जो तेरे जिय भावें॥

॥ श्री शृंगार सन्मुखकेपद ॥

चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नख शिख सुंदर सुजान बडभागीन ताहि गिनो सुजातही लपटावें ॥३॥ २६॥

॥ अथश्री शृंगार सन्मुखकेपद ॥ राग बिलावल ॥

मोहनलालके चरणारविंद त्रिविधतापहारी॥ कहीन जात कोन पुण्य करज सिरधारी॥१॥ निगम जाकी साख बोले सेवक अधिकारी॥ धींवरकुल अभय कीनो अहिल्या उद्धारी॥२॥ ब्रह्मा जाको पार न पावे गोपलीला वपु धारी॥ आसकरण प्रभु पद पराग परम मंगलकारी॥३॥ ॥२७॥

अद्भुत एक अनुपम बाग॥ युगल कमल पर गजवर क्रीडत। तापर सिंघ करत अनुराग॥१॥ हरिपर सरवर। सरपर गिरिवर। तापर फूले कंज पराग॥ रुचिर कपोत वसत ताऊपर। तापर अरुण अमृत फल लाग॥२॥ फलपर पुष्प। पुष्प पर पल्लव। तहां वसत शुक पिक मृगखाग॥ खंजन धनुष चंद्र। ता ऊपर तहीं वसत एक मणिधर नाग॥३॥ यह रस विरस होत नहीं कबहुं। शोभा नेक करत नहीं त्याग॥ सूरदास प्रभु वसत निरंतर। तिहिं हित बाढयो सिंधु सुहाग॥४॥२८॥

॥ श्री शृंगार स०के॥ कुल्हकेपद॥

नंद भुवनको भूषण माई॥ यशोदाको लाल। वीरहलधरको। राधा रवन सदा सुखदाई॥१॥ इंद्रको इंद्र। देवदेवनको। ब्रह्मको ब्रह्म। अधिकाई॥ कालको काल। ईश ईशनको। वरणको वरण। महावरदाई॥२॥ शिवको धन। संतनको सर्वस्व। महिमा वेद पुराणन गाई॥ नंददासकी जीवन गिरिधर गोकुल मंडन कुंवर कन्हाइ ॥३॥ ॥ २९॥

यह मागों गोपीजनवल्लभ॥ मानुष जन्म। ओर हरि सेवा। व्रजवसवो दीजे। मोही सुल्लभ॥१॥ श्रीवल्लभकुलको होंहुं चेरो। वैष्णवजनको दास कहाऊं॥ श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं। मनक्रम वचन कृष्ण गुण गाऊं॥२॥ श्री भागवत श्रवण सुन नित्य इन त्यज चित्त कहूं अनत न लाऊं॥ परमानंददास यह मांगत नित्य निरखों कबहूं न अघाऊं॥३॥३०॥

॥अथ श्री कुल्हेकेपद॥ राग सारंग॥

मोहन मोहनी शिर पाग॥ मोहन भांत विचित्र संभारी श्रीदामा अनुराग॥१॥ उज्वल श्याम सुदेश विराजत कुल्हे फूल पराग॥ देखत न अघात सुभगता सिमा

कृष्णदास बडभाग ॥२॥ ॥३१॥

॥अथ श्री टिपारेकेपद ॥ राग टोडी ॥

नवल कदंबछाह तर ठाढे शोभित हें नंदलाल ॥ शिश टिपारो कटि लाल काछिनी पीतांबर वनमाल ॥१॥ नृत्यत गावत वेणु बजावत सुरभी समूहन जाल ॥ परमानंददासको ठाकुर लीला ललित गोपाल ॥२॥३२॥

॥अथ श्री पनघटके पद ॥ राग ~~टोडी~~ ॥बिलावल ॥

गोकुल पनिहारी पनियां भरन चाली बडे बडे नयना तामें खुभ रह्यो कजरा ॥ पहिरें कसूंभी सारी। अंग अंग छबि भारी। गोरी गोरी बहियनमें मोतिनके गजरा॥१॥ सखी संग लिये जात। हस हस बूझत बात। तनकी सुधि भूली शीश धरें गगरा॥ नंददास बलिहारी। बीच मीले गिरिधारी। नयनकी सेननमें भूल गई डगरा॥२ ॥३३॥

अथ श्री ग्वालके पद ॥ राग बिलावल ॥

खेलन जाहु ग्वाल सब टेरत ॥ यह सुन कान्ह भये अति आतुर द्वारे तन फिरफिर जब हेरत ॥१॥ वार वार हरि मातहि बूझत कहि चौगान कहां हें ॥ दधि मथनीके पाछे देखो ले में धर्यो तहां हें ॥२॥ ले चौगान

अपने कर प्रभु आये घरतें बाहर ॥ सूर श्याम बूझत सब ग्वालन खेलोंगे किहि ठाहर ॥३॥३४॥

अथ पालनेके पद ॥ राग ~~आसाव~~रामकली ॥

नंदको लाल व्रज पालनें झूले ॥ कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरण अंगुष्ट मुख किलक फूले ॥ ॥१॥ नयन अंजन रेख भेष अभिराम सुठ कंठके हरि किंकिणी कटि मूले ॥ नंददासनी नाथ नंदनंदन कुंवर निरख नागरी देह गेह भूले ॥ २॥ ३५॥

अथ श्री भोजनके पद ॥ राग धनाश्री ॥

भोजन करत हें गोपाल ॥ षट रस धरे बनाय यशोदा साजे कंचन थाल ॥ १ ॥ करत वियार निहारत सुत मुख चंचल नयन विशाल ॥ जो भावे सो लेहो मेरे मोहन माधुरी मधुर रसाल ॥ २ ॥ जो सुख सनकादिकको दुर्ल्लभ दुर देखत ब्रजबाल ॥ परमानंददासको ठाकुर चिरजीयो नंदलाल ॥ ॥३॥३६॥

श्रीभोगसरवेके॥श्रीबीरीकेपद॥

॥अथश्रीभोग सरवेकेपद॥ रागसारंग

भोजन भली भांत हरि कीनो॥ खटरस व्यंजन मठा सलोना मांग मांग हरि लीनो॥१॥ हसत लसत परोसत नंदरानी बालकेलि रसभीनो॥ परमानंद उबर्‍यो पनवारो टेर सुबलको दीनो॥२॥ ॥३७॥

॥अथ बीरीकेपद॥ राग सारंग॥

सबभांति छबीली कान्हकी॥ नंदनंदनकी आवन छबीली मुख छबि बीरी सुपानकी॥१॥ अलक छबीली तिलक छबीलो पाग छबीली सुबानकी॥ भोंह छबीली दृष्टि छबीली सेन छबीली सुभानकी॥२॥ चरणकमलकी चाल छबीली शोभा अंग सुठानकी॥ परमानंद प्रभु बेन छबीलो सुरत छबीली सुगानकी॥ ३॥ ॥३८॥

वीरी नवल ग्वालीनी लाई॥ उज्वल पानसों लौंगसुपारी कर प्रणाम ढिंग आई॥१॥ चूनो खेरसार सुगंध मृगमद सुखद सनाई॥ श्रीविठ्ठल गिरिधारी कृपानिधि हाथन ले हित सोंज बनाई ॥२॥ ॥३९॥

॥श्रीबीरीके॥श्रीराजभोगसंमुखकेपद॥

॥ राग कान्हरो॥

शोभित नासिका गिरिधर गजमोती॥ खोलत बीरा खात हसत डोलत अरुण अधरकी दीनी पोती॥१॥ कुंडल लोल कपोल विराजत जगमगात मुख मंजुल जोती॥ गोविंद प्रभुकोजु श्रीमुख निरखत रसना कहा कहूं मति बोती॥२॥ ४०॥

॥अथराजभोग सन्मुखकेपद॥राग सारंग॥

जाकों वेद रटत। ब्रह्मा रटत। शंभु रटत। शेष रटत। नारद शुक व्यास रटत। पावत नहीं पाररी॥ ध्रुव जन प्रल्हाद रटत। कुंतिके कुंवर रटत। द्रुपदसुता रटत। नाथ अनाथन प्रतिपालरी॥१॥ गणिका गज गीध रटत। गौतमकी नार रटत। राजनकी रमणी रटत। सुतन देदे प्याररी॥ नंददास श्रीगोपाल। गिरिवरधर रूपजाल। यशोदाको कुंवर लाल। राधा उर हाररी॥ २॥४१॥

कहा जो भयो मुख मोरे कछु काहू जु कह्यो॥ रसिक सुजान लाडिलो ललन मेरी अखियन माय रह्यो॥१॥ अब कछु बात फैल परी दिये प्रेम जा मन भयो है दूधतें दह्यो॥ त्रैलोक अतिही सुजान

॥श्री रा०स०॥ श्री आरतीके पद॥

सुंदर सर्वस्व हर्यो गोविंद प्रभुजु लह्यो ॥२॥४२॥

ओढें लाल उपरनी अति झीनी॥ तन सुख श्वेत सुदेश अंस पर बहुत अरगजा भीनी॥१॥ अति सुगंध शीतल अरु चंदन साची रचना कीनी॥ रही धसी भुवपर पाग दुपेची कोटि मदन छबि छीनी॥२॥ सूथन बनी हिरमिची शोभित गति गयंदकी कीनी॥ परमानंद प्रभु चतुर शिरोमणि व्रजवनिता प्रेमरति दीनी॥३॥ ॥४३॥

॥ अथ आरतीके पद॥ राग सारंग॥

आरती करत यशोदा प्रमुदित फूली अंग न मात॥ बलबल कही दुलरावत आनंद मगन भई पुलकात॥१॥ कनक थार रत्न दीपावली चित्रत घृत भीनी बात॥ कलि सिंदूर दूब दधि अक्षत तिलक करत बहुभांत॥२॥ अन्न चतुर्विध विविध भोग दुंदुभी बाजत बहु जात॥ नाचत गोप कुंकुमा छिरकत देत अखिल नग दात॥३॥ बरखत कुसुम निकर सुरनर मुनि व्रज युवति मुसकात॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधरको श्रीमुख निरख लजत शशिकांत॥४॥
॥४४॥

॥श्री आरती॥ सोरठकेपद॥

॥राग गोरी॥

यशोदा काहेन मंगल गावे॥ पूरणब्रह्म सकल अविनाशी ताकों गोद खिलावे॥१॥ कोटि कीट ब्रह्मांडको करता मुनिजन जाकों ध्यावे॥ ना जानू ये कोन पुण्यते सो तेरी धेनु चरावे॥२॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद जपतप ध्यान न आवे॥ शेष सहस्र मुख जपत निरंतर हरिको पार न पावे॥३॥ सुंदर वदन कमल दल लोचन गोधनके संग आवे॥ करत आरती मात यशोदा सूरदास बल जावे॥४॥४५

॥राग सोरठकेपद॥

देखरी नवल नंदकिशोर॥ लकुटसो लपटाय ठाडे युवतीजन मन चोर॥१॥ चारु लोचन हस विलोकन देखके चित्त भोर॥ मोहनी मोहन लगावत लटक मुकुट झकोर॥२॥ श्रवण ध्वनी सुन नाद मोहत करत हृदयमें ठोर॥ सूर अंग त्रिभंग सुंदर छबि निरख तृण तोर॥३॥ ॥४६॥

हरि तन मोहनी माई॥ अंग अंग अनंग सतसत वरणि नहीं जाई॥१॥ कोऊ निरख विथुरी अलक मुख

॥ श्रीउत्थापनकेपद ॥

अधिक सुख पाई ॥ कोऊ निरख रही भाल चंदन एक
चित्त लाई ॥ २॥ कोऊ निरख रही चारु लोचन निमिष
भरमाईं॥ सूरप्रभुकी निरख शोभा कहत नहीं
जाई ॥ ३॥ ॥ ४७॥

॥अथश्रीउत्थापनकेपद ॥ रागनट॥

सुबल श्रीदामा कह्यो सखनसो अर्जुन शंख बजैये॥
घर जावेकी भैहें बिरियां श्रीगिरिधरलाल जगैये॥१॥
गेरठोरते मधुरी धुनि बाजे मधुर मधुर स्वर गैये॥
कुंजसदन जागे नंद नंदन मुदित बीरा फल लैये॥२॥
हरिदासवर्यके पूरे मनोरथ गोकुलताप नशैये॥ लटकत
आवत कमलमुख फिरावत परमानंद बलैये॥३॥
॥४८॥

लाडिले यह जल जिनहीं पियो॥ जब आरोगत तब
भर लाऊं तातें ढार दियो॥१॥ उठो मनमोहन वदन
पखारो सुंदर लोट लियो॥ तुम जानत हम अबहीं
पोढें पहेरहि द्यो सयो॥२॥ सुन मृदु वचन
श्याम उठ बैठे मान्यो मात कह्यो॥ परमानंद प्रभु भयेहें
भूखे मैया मेवा दयो ॥३॥ ॥४९॥

॥ श्रीभोग समयके पद॥ शृं०बडेके॥

॥अथश्रीभोग समयकेपद॥ रागनट॥

आँज मनमोहन पिय ठाडे सिंघद्वार मोहत व्रजजन
मन॥ तेसिय मोहन सिर पाग बनी तेसी कुल्हे
सुरंग तेसिय बनी माल वन ॥१॥ तेसिये कंठमणि
तेसोई मोतिन हार तेसिये पीतवरणी खुली हें
श्यामतन॥ गोविंद प्रभुकें जु अंग अंग परवार फेर
डारो कोटि मदन ॥२॥ ॥५०॥

प्रीतम प्रीतिहीते पैये ॥ यद्यपि रूपगुण शील सुघरता
इन बातन न रिझैये॥१॥ सतकुल जन्म करम शुभ
लक्षण वेद पुराण पढैये॥ गोविंद विना स्नेह सूआ
लों रसना कहा जु नचैये ॥२॥ ॥५१॥

॥ अथश्रीशृंगार बडे होयवकेपद॥ रागगोरी॥

अंग आभुषण जननी उतारत॥ कुलरी ग्रीव माल
मोतिनकी केयूर ले भुजा श्याम निहारत॥१॥ क्षुद्रावली
उतारत कटि सेंत धरत महींपर मन वारत॥
रोहिणी भोजन करहु चढाई वार वार कहि कर कर
आरत॥ २॥ भूखे भैये श्याम हलधरपें यह प्रेम
विचारत॥ सूरदास प्रभु मात यशोदा पट ले दुइन

अंतर रज झारत ॥ ३॥ ॥५२॥

कहो कहां खेले हो लालन बात कहो मोसों बनकी॥ आवो उछंग सांवरे मोहन गौरज पोंछु वदनकी॥१॥ सुंदर वदन कमल कुमलानो और दशा भई यातनकी॥ रसिक प्रीतमसों कहत नंदरानी बलबल छगन मगनकी ॥२॥ ॥५३॥

॥अथ सांझ समय घैयाके पद ॥राग गोरी॥

घैया पीवत सुंदर स्याम॥ मथ मथ देत मात यशोदा रुचिसों लेत घनश्याम॥१॥ जल अचवाय वदन फिर पोछ्यो आभूषण सब धरे उतार॥ सूक्ष्म भूषण रहे अंग प्रति सो छबि निरख जननी बलहार॥२॥ दूध भांत फिर दियो रोहिणी रुचिसों खात मनोहर बाल॥ जल अचवाय बीरी दई जननी यह छबि निरखत रसीक निहाल॥३॥ ॥५४॥

॥अथ वियारूके पद ॥ राग कान्हरो॥

व्यारू करत हैं घनश्याम॥ मधु मेवा पकवान मिठाई पिस्ता द्राख बदाम॥ १ ॥ दूध भात खोवा बासोंधी

ले आई ब्रजवाम॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर अंग अंग अभिराम॥२॥ ॥५५॥

मोहनलाल वियारू कीजे॥ व्यंजन मीठे खाटे खारे रुचिसों माग जननीपें लीजे॥१॥ खोबा मिश्री और बासोंधी ताऊपर तातो पय पीजे॥ सखान सहित मिल जेंवत रुचिसों जूठन आशकरण कूं दीजे ॥२॥ ॥५६॥

॥अथ श्रीदूधके पद॥ राग ईमन॥

अबे दूध लाई हो यशोदा मैया कीजे लाडिले पान॥ कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे ब्रजराजकुंवर वर तेरी बेनी बढेगी मेरे भैया॥१॥ आछो नीको अति ओट्यो और तामें मधुर मिठैया॥ आशकरण प्रभु दूध पीजिये जननीकों सुख दीजिये मात उठत करो घैया॥२॥ ॥५७॥

॥राग बिहाग॥

हसहस दूध पीवत नाथ॥ मधुर कोमल वचन कंहि कहि प्राण प्यारी साथ॥१॥ कनक कटोरा भर्यो

अमृत दीयो ललिता हात॥ लाडली अचवाय पहिले पीछें आप अघात॥२ चिंतामणि चित्त वस्यो सजनी नाहिन और सुहात॥ श्यामा श्यामकी नवल छबिपर रसिकबलबल जात॥३॥५८॥

॥अथश्री अचवनकोपद॥ रागबिहागरो॥

अचवत युगलकिशोर किशोरी॥ भोजनकर चोकी पर बैठे भलीबनी यह जोरी॥१॥ एकसखी पाय पलोटत ठाढी एकसखी करत निहोरी॥ कुंभखीरको एक ले आई एकबीरा भर झोरी॥१॥ एकसखी लाई पीयको वागो प्यारीजूकी सुरंग पटोरी॥ एक सखी दरपण ले ठाढी एक युगलचरणन रतिजोरी॥३॥ निजमंदिर बैठे पियप्यारी कोकुवारवार तृणतोरी॥ सर्व सखी श्रीवल्लभजूकी जूवन लेनकूं बहुत निहोरी॥४॥ ॥५९॥

॥ अथश्रीशयनसमयकोपद॥रागकल्याण॥

मेरेंतो गिरिधरही गुणगान॥ यह मूरत खेलत नयननमें यही हृदयमें ध्यान॥१॥ चरणरेणु चाहत मन मेरो यही दीजिये दान॥ कृष्णदासकी जीवन गिरिधुर मंगल रूपनिधान॥२॥ ॥६०॥

रसिक शिरोमणि राग कल्याण गावे॥ अवघर विकट तान तरंग भेद उपजावे॥१॥ सब विध सुघर सुजान सुंदर मोहन वेणु बजावे॥ गोविंदप्रभुकों वृषभाननंदिनी रीझ प्यारी कंठलगावे॥२॥ ६१॥

नंदलाल संग नाचत नवलकिशोरी॥ खरज रिखभ गंधार सप्तस्वर मध्यतार लेत ग्रग्र तततत होरी॥१॥ जहां रसिक गिरिधर शब्द उघटत ग्रग्र थुंगथुंगन होरी॥ गोविंदप्रभु बनी नवनागरी गिरिधर रसजोरी॥२॥ ॥६२॥

॥राग कान्हरो॥

प्यारी नवल नागरी संगरी। संग नवल नागर राई॥ नवल कुंज विहारी। मनमथ मन हारी। सुरत केलि अंग अंग सुखदाई॥१॥ नवलराग कान्हरो जु करत सुघर नवल। नवलतान लेत मनभाई॥ नवलराग दंपतिके देखत गोविंद बल बल जाई॥२॥ ॥६३॥

अथश्रीपोढवेके पद॥रागकेदारो॥

पोढियें पीय कुंवर कन्हाई॥नवनववसन नवल कुसुमावली हो अपने कर सेज बनाई॥१॥ नाहिन समें सखी काहूको ग्वाल मंडली सब बोराई॥ आशाकरण प्रभु मोहन नागर नागरिकुंललिता ले आई॥ २ ॥ ॥६४॥

पोढियें घनश्याम बलैया लेहू॥अतिश्रम भयो ~~जै~~ वन गौ चरावत धोस परीहें घामं॥१॥ सीयरी व्यार झरोकनके मघ आवत अति शितल सुख धाम॥आशाकरण प्रभु मोहन नागर अंग अंग अभिराम ॥ २ ॥ ॥६५॥

॥अथश्रीकहानीके पद॥ रागबिहागरो॥

नंदनंदन एक कहूं कहानी॥रामचंद्र राजा दशरथके।जनकसुता याके घर रानी॥१॥ तात वचन सुन पंचवटी बन।छांड चले ऐसी राजधानी॥तहां वसत सीताहर लीनी।रजनीचर अभिमानी॥२॥ पहिली कथा पुरातन सुनसुन जननीके मुख बानी॥ लक्ष्मंण धनुष धनुष कहि टेरत।यशुमति

सुर डरानी ॥३॥ ॥६६॥

सुन सुत एक कथा कहूं प्यारी ॥नंदनंदन मन आनंद उपज्यो।रसिकशिरोमणि देत हुंकारी॥१॥ दशरथ नृप जो हते रघुवंशी।तिनके प्रकट भये सुत च्यारी॥ तिनमें राम एकव्रतधारी।जनकसुता ताके घर नारी॥२॥ तात वचन सुन राज त्यज्यो हैं।भ्राता सहित चले बनवारी॥ धावत कनक मृगके पाछें।राजीवलोचन केलि विहारी॥२॥ रावण हरण कीयो सीताको।सुन नंदनंदन नींद निवारी॥ परमानंद ✗ प्रभु रटत चांप कर लक्ष्मण दे भ्रम भारी॥ ४ ॥ ॥६७॥

अथश्री महात्मके पद ॥ राग बिहाग ॥

जो रस रसिक कीर मुनि गायो ॥ सो रस रटत रहत निशावासर। शेष सहस्रमुख पार न पायो ॥१॥ गावत शिवशारद। मुनिनारद। कमल कोशवासी न चखायो ॥ यद्यपि रमा रहत चरणनतर। निगमन अगम अगाध बतायो ॥२॥ तरणितनयातट। बंसीवट निकट। वृंदाविपिन वीथन वहायो ॥ सो रस रसिक दास परमानंद। वृषभानसुता कुच बिच वसायो ॥३॥ ॥६८॥

जाके मन वसे श्यामघन माधो ॥ सो सुंदर। सो धनी। दक्ष सोई। सोई कुलीन। सोई साधो ॥१॥ सो पंडित। सो गुणपुंज। सोई जो गोपाल कही गावे ॥ कोटि प्रकार धन्य सोई। नर जो नाहिं हरि विसरावे ॥२॥ सो नर सूर वेद विचारत। सो भूपति। सोई ज्ञानी ॥ परमानंद धन्य सोई। समरथ जिहिं लाल चरण रति मानी ॥३॥ ॥६९॥

कमलनयन कमलापति त्रिभुवनके नाथ ॥ एक प्रेमतें सब बने जो मन होवे हाथ ॥१॥

सकल लोककी संपदा जो आगें धरिये ॥ भक्ति विना माने नहिं जो कोटिक करिये ॥२॥ दास कहावन कठिन हैं जोलों चित्त राग ॥ परमानंद प्रभु सांवरो पैयत बडभाग ॥३॥ ॥७०॥

जापर कमलाकंत ढरें ॥ लकरी घासके वेचनहारो ता शिर छत्र धरें ॥१॥ विद्यानाथ अविद्या। समरथ जो कछुं चाहि। सोई करें ॥ रीते भरे। भरे पुन ढोरे। जो चाहे तो फेर भरे ॥२॥ सिध्द पुरुष अविनाशी समरथ काहूते नडरे ॥ परमानंद सदा यह संपति। मनतें कब नटरें ॥३॥ ॥७१॥

दास अनन्य मेरो निजरूप ॥ दरशनमात्र। तापत्रय नाशत। छुडावें गृह बंधन कूप ॥१॥ मेरी बांधी भक्त छुडावें। भक्तकी बांधीं छुटे न मोहि ॥ कबहुं केलें मोहीकुं बांधे। तहां कहो कैसें ऊत्तर होही ॥२॥ मै निर्मल सब जगतकी जीवन। मेरी जीवन मेरे दास ॥ परमानंद ताहिके हृदये। जाके हृदये प्रेमप्रकाश ॥३॥ ॥७२॥

श्रीपति दुःखित भक्तअपराधें। संतन द्वेष द्रोहि ताकरके आरत सहित जो मोहि आराधें॥१॥ सुनो सकल वैकुंठनिवासी। साची कहूं जिन मानो स्वेदं। तिनपर कृपा करूं कैसी विध। पूजत पांव कंठकूं छेदें॥ २॥ जनसों वैर। प्रीत मोसों कर। मेरो नाम निरंतर लेहें॥ सूरदास भगवंतवदत यों मोहि भजें पण यमपुर जेहें ॥ ३ ॥ ॥७३॥

तिहारे चरणकमलको महात्म शिवजाने के गौतमनारी॥ जटाजूट मध्य पावनीगंगा अजहूं लिये फिरत त्रिपुरारी॥१॥ के जाने शुकदेव महामुनि के जाने सनकादिक चार॥ के जाने विरोचनको सुत सर्वस्वदे मेटी कुलगार॥२॥ के जाने नारद मुनिज्ञानी गुप्त फिरत त्रैलोक मंझार॥ के जानें हरिजन परमानंद जिनके हृदय वसत भुजचार ॥ ३ ॥ ॥७४॥

॥ अथश्रीआश्रयकेपद॥ राग बिहाग॥

धन्य धन्य वृंदावनकेवासी॥ निशिदिन चरणकमल अनुरागी श्यामाश्याम उपासी॥१॥ अष्टमहा सिद्धि द्वारे ठाढी रमाचरणकीदासी॥ या रसको जो मरम न जानो जाय वसो किन काशी॥२॥ भष्म लगाय गले लिंगबांधो निशिदिन फिरो उदासी॥ परमानंददासको ठाकुर सुंदर घोष निवासी ॥३॥७५॥

हरिरस तबहीं तो जाय पैये॥ स्वाद विवाद हर्ष आतुरता इतनो दंड जो सहिये॥१॥ कोमल वचन दीनता सबसों सदा प्रफुल्लित रहिये॥ गए नहिं सोच आए नहिं आनंद ऐसे मारग वहिये॥ २॥ ऐसी जो आवे जियमाहीं ताके भाग्यकी कहा कहिये॥ अष्ट सिद्धि सूर श्यामपें जोचहिये सो लहिये॥३॥७६॥

लागे जो श्री वृंदावनको रंग॥ मनके मैल सब छुट जेहें अरु विषयनको संग॥ १ ॥ राधावर सेवत अरु सुमरत उपजत लहेर तरंग॥ सखीभाव

सहज होय। छिनमें पुरुषभाव होय भंग॥२॥
देह अभिमान सबे छुट जेहें मनसा होय अपंग॥
परमानंद नंदनंदन भज मिट हें कोटि अनंग॥३॥
॥७७॥

जो लों हरि आपनपों न जनावें॥ तो लों सकल
सिध्दांत मारगको पढें सुनें नहि आवे॥१॥
सुन ब्रह्मा नारायण मुखतें। नारदकुं शिख दीनी॥
नारद कही वेदव्याससों। आप खोज नहि
कीनी॥२॥ वेदव्यास औषदकी न्याई पढ। तन
ताप मिटायो॥ तातें पढे मुनि शुकदेव। परीक्षितकुं जो सुनायो॥३॥ यद्यपि सुनी नृपश्रवणकी
लीला दशम कही शुकदेवा॥ पैं सर्वोत्तम भाव
न उपज्यों तातें करी न सेवा॥४॥ श्रीभागवत
दधि मथके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम॥ कर आवरण
दूर निज जनके हाथ दिये पुरुषोत्तम॥५॥
सेवा साज शृंगार सुभग रस खानपान प्रकटायो॥ वृंदावन निकुंजकी लीला हरिजीवन
स्वाद चखायो॥६॥७८॥

रे मन चिंता न कर पेटकी॥ हलनचलन यामें

कछुं नाहिं न कलम लिखी जो ठेटकी॥१॥ जीव
जंतु जेते जलथलके तिन निधि कहा समेटकी॥
समे पाए सबहीनकुं पोंहचे। कहां बाप कहांबेटकी॥२॥ जाको जितनो लिख्यो विधाता। ताको
पोंहचे तेटकी॥ सूरदास ताहे क्यों ना सुमरे जो
है ऐसो चेटकी॥३॥७९॥

तुमत्यज कोन सनेही कीजे॥ सदा एकरस कोनिवहतहें जाकी चरणरज लीजे॥१॥ यह न होय अपनी जननी ते पिता करत नहि ऐसी॥ बंधु सहोदर सेवन करहीं मदनगोपाल करत हैं जैसी॥२॥ सुख अरु
लोक देत हें व्रजपति अरु वृंदावनवास वसावत॥
परमानंददासको ठाकुर नारदादि पावन यशगावत॥३॥८०॥

माधो या घर बहुत धरी॥ कहन सुननकों लीलाकीनी मर्यादा नटरी॥१॥ जो गोपीनकें प्रेम न होतो अरु भागवत पुराण॥ तो सब ओघड पंथहिं होतो कथत गमैया ज्ञान॥२॥
बारह बरसको भयो दिगंबर ज्ञानहीन संन्यासी॥

स्यानपान घर घर सबहिनके भष्म लगाय उदासी ॥ ३॥ पाखंड दंभ बढ्यो कलियुगमें श्रद्धा धर्म भयो लोप॥ परमानंद वेद पढ बिगर्यो का पर कीजे कोप ॥ ४ ॥८१॥

भज सखीभाव भाविक देव ॥ कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न माने सेव॥ १॥ धूमकेतु कुमार मांग्यो कोन मारग निति॥ पुरुषते त्रियभाव उपज्यो सबे उलटी रीति॥ २॥ वसन भूषण पलट पहेरे भावसों संजोय॥ उलट मुद्रा दई अंकन वरण सूधे होय॥ ३॥ वेद विधिको नेम नाहीं प्रीतिकी पहिचान॥ व्रज वधू वश किये मोहन सूर चतुर सुजान॥ ४॥ ॥८२॥

अघ सिंघारिनी। अधम उद्धारिणी। कलिकाल तारिनी। मधुमथन गुणकथा ॥ मंगल वधायिनी। प्रेमरस दायिनी। भक्ति अनुपायिनी। होत जिय सर्वथा ॥ १॥ मथ वेद कथ ग्रंथ कहत व्यासादि मुनि। अजहुं अधुनीक जन कहत हुं मतियथा। परम पद सो पान करी गदाधर

गान
अन्य आलापतें जात जीवन वृथा ॥ २॥८३॥

श्रीविठ्ठलनाथ नाम रस अमृत पान सदा तूं कररे रसना॥ जा तूं अपनो भलो चाह तो यह बात जिय धररे रसना॥१॥ या रसके प्रतिबंधक जेते तिनतें तूं अति डररे रसना॥ हरिको विमल यश गावत निरंतर जात विघ्न सब टररे रसना ॥ २॥ वारंवार कहत हूं तोसों यह मारग अनुसररे रसना ॥ छीतस्वामी श्रीगिरिधरन श्रीविठ्ठल आनंद उरमें भररे रसना ॥ ३॥ ८४॥

अचंबो इन लोगनको आवे ॥ छांड गोपाल अमित रस अमृत माया विषफल भावे॥१॥ निंदित मूढ मलयचंदनकों कंपिके अंग लगावे॥ मानस सरोवर छांड हंस सर काक सरोवर न्हावे॥ २॥ पगतरज रतन जानत मूरख परघर जाय बुझावे॥ लक्ष चोरासी स्वांग धरे घर फिर फिर यमहीं हसावे॥ ३॥ मृगतृष्णा संसार जगत सुख तहांतें मन न डुरावे ॥

सूरदास भक्तनसों मिलके हरि यश कहान गावें ॥४॥ ८५॥

कैसें कीजे वेद कह्यो ॥ हरिमुखदेखत विधि निषेधको नाहिन ठौर रह्यो ॥ १॥ दुःखको मूल स्नेह सखीरी सो उर पैठ रह्यो ॥ परमानंद प्रेमसागरमें गिर्यो सो लीन भयो ॥ २॥ ८६॥

हरिदासनतें गर्व न करवो ॥ यह अपराध परमपदहूंते उतर नरकमें परवो ॥ १॥ हुं धनवंत कुलवंत यह भीक्षुक यह कबहुं मनमें नहीं धरवो ॥ गज सिंहासन अश्व पालखी भवसागर नहीं तरवो ॥ २॥ खानपान एकठाय चलत हें ऐसें कारज कबहुन सरवो ॥ सूरदास यह सत्य कहत हूं भक्तन संग उबरवो ॥ ३॥ ८७॥

हों वारी इन वल्लभियन पर ॥ मेरे तनकों करों बिछोना शिश धरों इनके चरणनतर ॥ १॥ नेह धरी देखों मेरी अखियन मंडलमध्य बिराजत गिरिधर ॥ यह तो मेमोहि प्राणजीवन धन

दान दिये श्रीवल्लभवर ॥ २॥ पुष्टिप्रकार प्रकट करवेकों फिर प्रकटे श्री विठ्ठल वपुधर ॥ रसिक सदा आश इनकी कर वल्लभीयनकी चरणरज अनुसर ॥ ३॥ ८८॥

॥ राग केदारो ॥

नमो श्री वल्लभाधीश स्वामी ॥ अखंड अवतार जगधार लीला करी आसुरी जीव सब मोह पामी ॥ १॥ निगम कर जोरकें करत स्तुति सदा सनक शुक व्यास नहीं पार पामी ॥ शेष अज रुद्र सुरतेतीस ध्यावत सदा रटत मुनिजन सकल दिवस यामी ॥ २॥ देखकर दीनकी अतुल करुणा भई भाग्यनिधि प्रकट भये गरुडगामी ॥ पुष्टिपथ प्रगट कर नाम नौका करी पार संसार कीए शरण आमी ॥ ३॥ वेद मथ सकल सिद्धांत नवनीत रस दैविजन दूर कीए हृदय भ्रामी ॥ कपट कलि दंड सब ग्रंथ खंडन किये व्यासनंदन वचन पार गामी ॥ ४॥ कोटि वैराट तन रोमहि रोम प्रति जगत आधार

धरधीर धामी॥ नंदगृह प्रकट भुवि भक्ति आरत हरी तैलंग कुल तिलक शीर छत्र छामी॥५॥ कोऊ कहे विप्र कोऊ विविध पंडित कहें कोऊ कहें अंश कोऊ आत्मरामी॥ स्वकीयजन एक निर्धार निश्चय कीयो वस्तुतः कृष्ण जो बंधे दामी॥६॥ कोन गुण कही शके अखिल व्रज इशके दीन व्है चरणांतर-शीश नामी॥ शरण वल्लभ मलि ए भागयको पार नहीं भज कृष्णदास प्रभु अंतरयामी॥७॥ ८९॥

हरि यह कोन रीति ठटी॥ दास दुःखी सुख होत विमुखन बडी लाज घटी॥१॥ वेद पंथ श्री भागवतकी बांधी मेंड कटी॥ देख यह विधि सबनकी मति भजनतें उघटी॥२॥ करकुसंग सुसंग जाके विषय[illegible]य घटी॥ कुमति पावश कूपजलतें आवत उबटी॥३॥ करगवारे कहा भूमि जात गति नहटी॥ कहा फलकी चिठी सबकी एकहि वेर फटी॥४॥ चरणपर जे रहत तिनकी होत मति उलटी॥ कहा गीता

भागवतमें कही बात नही॥५॥ हमारी यह वेर मनसा दान हूंतें हटी॥ रसिक कहि कहि जीभ तुमसो छुलत छुलत छटी॥६॥ ९०॥

चकईरी चलि चरण सरोवर जहां नहीं प्रेम वियोग॥ जहां भ्रम निशा होत नहीं कबहुं सो सागर सुख योग॥१॥ सनकसें हंस मीन शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश॥ प्रफुल्लित कमल निमिष नहीं शशिडर॥ गुंजत निगम सुवास॥२॥ जिहिं सर सुभग मुक्ति मुक्ता फल विमल सुकृत जल पीजे॥ सो शर छांड क्यूं कुबुद्धि विहंगम इहां रही कहा कीजे॥३॥ जहां श्री सहस्त्र सहित हरि क्रीडत शोभीत सूरजदास॥ अबन सुहाय विषय रस छिल्लर वह समुद्रकी आश॥४॥ ९१॥

भृंगीरी भज श्याम कमल पद जहां नहीं निशिको त्रास॥ जहां विधु भानु समान प्रभा नखसो वारिज सुखरास॥१॥ जहां किंजल्क भक्ति नव लक्षण ज्ञान कर्म रस एक॥

निगम सनक शुक शारद नारद मुनि जन भृंग अनेक ॥२॥ शिव विरंची खंजन मन रंजन छिन छिन करत प्रवेश ॥ अखिल लोक तिहिं वास सुकृत जल प्रकटित श्याम दिनेश ॥३॥ सुन मधुकर भ्रम त्यज कुमुदिनी गण राजीववर की आश ॥ सूर प्रेम सिंधु में प्रफुल्लित जहां चल करे निवास ॥४॥९२॥

सुखनिधि श्री गोकुल को वसवो ॥ छिन छिन वारंवार सखीरी श्री वल्लभसुत निरखहं लसवो ॥१॥ गृहन गृहन प्रति कुंजन कुंजन पिय संग केलि परस्पर हसवो ॥ एकहि कनक कसोटी उपर सुभग प्रेम वलित नैनन कसवो ॥२॥ यमुना तीर मंहा गज सों मिल भावें अंगो अंग परसवो ॥ दंपति रूप रासि सुख सीमा माधोदास यह रंग रसवो ॥३॥९३॥

माधो यह प्रसाद हौं पाऊं ॥ तुव भृत्य भृत्य भक्त परिचारक दास को दास कहाऊं ॥१॥ ये परमारथ मोहि गुरु शिखायो श्यामा श्याम की पूजा ॥ यह वासना वसो जिय मेरे देव न देखूं दूजा ॥२॥ परमानंददास तुम ठाकुर यह नातो जिन टूटो ॥ नंदकुमार यशोदानंदन हिल मिल प्रीत न छूटो ॥३॥९४॥

त्यज मन हरि विमुखन को संग ॥ जाके मिलें कुबुद्धि उपजत । परत भजन में भंग ॥१॥ खरकूं कहा अरगजा लेंपन । मर्कट भूषण अंग ॥ काग कहा कपूर चुगावत श्वान न्हवावत गंग ॥२॥ कहा भयो पय पान करावत । विष नहि त्यजत भुजंग ॥ सूरदास प्रभु कारी कामर चढत न दूजो रंग ॥३॥९५॥

अथश्रीवैरागकेपद ॥ राग बिहाग ॥

मनरे तूं भूल्यो जन्म गमाये ॥ खबर न पडी तो कोशिर ऊपर काल सदा मढरावे ॥१॥ खान पान अटक्यो निशवासर जिभ्याकाड लडयावे ॥ गृह सुख देख फिरत फूल्यो सो सूपने मन भटकावे ॥२॥ के तूं छांड जायगो इनकों के तुंहिं यही छुडावें ॥ ज्यों तोता सेवार पर बैठ्यो हाथ कछू नही आवें ॥३॥ मेरी मेरी करत बावरे आयुष वृथा गमावे ॥ हरि हेतु विसार विषयसुख विष्टा चित मन भावे ॥४॥ गिरिधरलाल सकल सुखदाता सुन पुराण सब गावे ॥ सूरदास वल्लभ उर अपने चरण कमल चित लावे ॥५॥
॥१६॥

विन गोपाल [illegible] नही कोई अपनो ॥ कोन पिता माता सुत घरुणी । यह सब जगत रेंनको सपनो ॥१॥ धन कारण निशदिन जग भटकत वृथा जन्म योंही सब खपनो ॥ अंत सहायक रे नही कोई निश्चे काल अग्निमुख झपनो ॥२॥ सब त्यज हरि भज युगल कमल पद मोह निगढ चरणन ते कपनो ॥ कहत दास श्रीवल्लभ

विठ्ठल श्रीगिरिधर रसना मुख जपनो ॥३॥
॥१७॥

सब दिन होत न एक समान ॥ प्रकटत हें पूर्वकी करणी । त्यज मन सोच अज्ञान ॥१॥ कबहुंक राजा हरिश्चंद्र । गृह संपति मेरु समान ॥ कबहुंक दास श्वपच गृह व्हयके । अंबर हरत मसान ॥२॥ कबहुंक युधिष्ठिर ~~राज~~ राज सिंहासन । अनुचर श्रीभगवान ॥ कबहुंक द्रुपदसुता कौरव वश । केश दुःशासन तान ॥३॥ कबहुंक दुलहे बन्यो वराती । चहूं दिश मंगल गान ॥ कबहुंक आप मृतक व्हे जात हें । करलंबे पद पान ॥४॥ कबहुंक राम सहित जानकी । विचरत पुष्प विमान ॥ कबहुंक रुदन करत फिरत हें । महावन उद्यान ॥५॥ जननी जठर जन्यो जा दिन तें । लिख्यो लाभ अरु हाण ॥ सूरदास यत्न सब जूठे विधिके अंक प्रमाण ॥६॥ ॥१८॥

देख्यो दुर्मति यह संसारकी हरि सो हीरा छांड हाथतें बांधत पोट विकारकी ॥१॥ जूठे सुख

में भूल रहे हैं सुध विसरी करतारकी॥नाना
विधके करम कमाये खबर नही शिरभारकी
॥२॥ कोऊ खेति कोऊ वणिज चाकरी कोऊ
आशा हथियारकी॥ अंध धुंध फिरत दशों
दिश फूटी आंख गव्हांरकी॥३॥ नर्क जाने
के मारग चालें सुन सुन विप्र लबारकी॥
अपने हाथ गलेमें डारत फांसी मायाजारकी
॥४॥ वारंवार पुकार कहत हों सुन हों सज्जन
न द्वारकी॥ सूरदास यह विन सजायगी
देह छिनकमें छारकी ॥५॥ ९९॥

भजन विन जीवत जैंसे प्रेत॥ मन मलीन घर
घर डोलत हैं उदरभरन कहेत॥१॥ कबहुं
पावत पापको पैसा गाड धूडमें देत॥सेवा
नहीं गोविंदचंदकी भवन भीलकी खेत॥२॥
मुख कटु वचन करत पर निंदा संतनकूं
दुख देत॥सूरदास बहुत कहा कहुं डूबे कुटुंब
समेत ॥ ३ ॥ १००॥

मो सम कौन कुटिल खल कामी॥ कहा छुपी

तुमसें करुणा निधि सबके अंतरयामी॥१॥
तुम तनु दियो तुम्हें विसरायो ऐसो लोन हरामी॥
तिहारे चरण छोड विमुखनकी नित
उठी करत गुलामी॥२॥ जहां सत्संग होत
तहां आलस अधमन संग विश्रामी॥भर
भर उदर विषय मद पीवत जेंसे सूकर ग्रामी॥३॥
पापी पतित अधम पर निंदक सब
पतितन शिरनामी॥ सूर पतित तुम पतित
उद्धारण सुनिये श्रीपति स्वामी॥४॥१०१॥

मनरे श्यामसों कर हेत॥ कृष्णनामकी वाड
करले बचे तेरो खेत॥१॥ मन सुवा तन पींजरा
तासूं बांध्यो हेत॥ कालरूपी मंजार
डोले अब घडी तों लेत॥२॥ विषय विषय
छांड देरे उतर सायर सेत॥ सूर श्री गोपाल
भजले गुरु बताये देत॥३॥१०२॥

॥ अथश्री नित्य नियमके पद ॥ राग गोरी ॥ साखी ॥

रागनको पति कानरो धरणीको पति इंद्र ॥ नारनको पति चंद्रमा । श्रीगोपीपति गोविंद ॥ चलोरी सखी वहां जाइये । जहां श्रीयमुनाको तीर ॥ जातां निरखीये श्रीनाथजी । वलतां भरीये नीर ॥१॥ चलो सखी वहां जाइये । जहां वसे व्रजराज ॥ गोरस बेचन हरि मिले । एक पंथ दो काज । पंख होय तो उड मिलुं । यही तनकी स्थीत ॥ ज्यों ज्यों सज्जन सांभरे । त्यों त्यों बाढत प्रीत ॥२॥ बंक शब्द रस दृष्टि हैं । दरशन मन अभिलाख ॥ पुण्यश्लोक मनमथ रटत हैं । सो कुंज भुवन [illegible] वास ॥ अवनी खनी सार मधुपुरी । श्रीयमुना जापरी केश ॥ श्रीगोवर्द्धन जाको भाल है ताको तीलक श्री विठ्ठलेश ॥ ॥ श्याम वरण गिरिवर धरण । गोपीजन चित्तचोर ॥ श्रीव्रजराज कुंवर हैयेमें वसे सो नागर नंदकीशोर ॥३॥ नीके बंक हसके कहयो ॥ नीके वदन देखाय ॥ नेननकी आड होय रही ॥ सो जुग समान पल जाय ॥ मुरली मधुर बजावही ॥ सप्तक सकल घोर ॥ चितमे यह धुमी छब रही ॥ सो नागर नंदकीशोर ॥ बोलत मधु

रे बैनही ॥ गिरिचढ दीनी टेर ॥ धोरी धुमरी गंगही ॥ सो टेरत वदन सहित ॥ जा दिनते देखें द्रगनही ॥ मरुचि भयो संसार ॥ निंद न आवे रेनही ॥ सो भूल्यो अहार विहार ॥ दर्शनकों अखिया तपे ॥ सुन बोली निज वन ॥ मिलवेकों हीयरो तपे ॥ सो मेरे जीयमें बोहोत सनेह ॥ चित्त हेत अभिलाखही ॥ लोचन निमिष जुग जाय ॥ देख्यो द्रष्टि भरी या हीये ॥ सो सुंदर नटवर राय ॥ निरख वदन शरद शशि ॥ मन अटकयो याही ठोर ॥ अमृत रसके पानसो ॥ कुमुदिनी और चकोर ॥ तजी वीवेक छांडी लजा ॥ सज्जन कुटुंब श्रुति सार ॥ जलबंक शब्द देखीके ॥ प्रीत अधिक अपार ॥ कोटि काम बलिहारही ॥ निरख गजगति चाल ॥ व्रज युवतिनके नेहसों ॥ नैन कमल विशाल ॥ मोर बपैया चातकी ॥ रटत जलधर ज्यों नीर ॥ नागर नंदकिशोर बिन ॥ कठ धाम यह ग्रह ॥ सघन कुंज निज बिलासही ॥ यह सुख अधिक अपार ॥ हम श्री वृंदावन वेली भये ॥ तुम भ

धुप करत गुंजार ॥ ॥१०३॥

॥ राग गौरी ॥

श्री गोवर्द्धनवासी सांवरे लाल। तुम विन रह्यो न जाय हो ॥ व्रजराज लडेतें लाडिले ॥ ध्रुव ॥ बंक चित्ते मुसिकायकें लाल। सुंदर वदन दिखाय ॥ लोचन तलफें मीन ज्यों लाल। पल छिन कल्प विहाय ॥१॥ सप्तक स्वर बंधानसों लाल॥ मोहन वेणु बजाय॥ सुरत सुहाई बांधिकें नेंक मधुरें मधुरें गाय ॥२॥ रसिक रसीली बोलनी लाल। गिरि चढ गैयां बुलाय॥ गंगा बुलाई धूंमरी नेंक ऊंची टेर सुनाय ॥३॥ दृष्टि परें जा दिवसतें लाल। तबतें रुचें न आन॥ रजनी नींद न आवहि मोहि। विसर्यो भोजन पान ॥४॥ दरशनकों नयना तपें लाल। वचन सुननकों कान ॥ मिलिवेकों हीयरा तपें मेरे जीयके जीवन प्राण ॥५॥ पूरण शशि मुख देखकें लाल। चित्त चोंट्यों वाही ओर ॥ रूप सुधारस पानकें लाल। सादर कुमुद चकोर ॥६॥ मन अभिलाषा व्है रही लाल। लागत नयन निमेख ॥ इकटक देखों भावते। प्यारो नागर नटवर भेख ॥७॥

लोक लाज कुल वेदकी लाल। छांड्यो सकल विवेक॥ कमल कलि रवि ज्यों बढें लाल। छिन छिन प्रीति विशेष ॥८॥ कोटिक मन्मथ वारने लाल। देखत डगमगी चाल॥ युवतिजन मन फंदना लाल। अंबुज नयन विशाल ॥९॥ कुंज भवन क्रीडा करो लाल। सुख निधि मदन गोपाल ॥ हम श्री वृंदावन मालती। तुम भोगी भ्रमर भूपाल ॥१०॥ यह रट लागी लाडिले लाल। जैसें चातक मोर ॥ प्रेम नीर वरषा करो लाल। नव घन नंद किशोर ॥११॥ युग युग अविचल राखियें लाल। यह सुख शैल निवास ॥ श्री गोवर्द्धनधर रूप पें। बल जाय चतुर्भुज दास॥
॥१२॥१०४॥

यशुमतिसुत मोहि दीजे ॥ दरशन ॥ तन मन प्राण तपत हैं निश दिन। छिन एक होत बराबर वरसन ॥१॥ सियरो होतो पहलें हृदयो। अबतो अखियां लागी तरसन ॥ रसिक प्रीतम विनती चित्त धरीये। तुमसे सरस कहां लगि अरसन ॥२॥ १०५॥

चरण शरण व्रजराज कुंवरकें ॥ हम विधि अविधि कछू नहिं समजत । भरोसें श्रीमुरलीधरके ॥१॥ रहत आसरें व्रजमंडलमें । भुजा छांह श्रीगिरिधरके । प्रभु मुकुंद माधो सुखदाई । हाथ बिकांने श्रीराधावरके ॥२॥१०६॥

गिरिधरलाल शरण तेरे आयो । शरण तेरे आयो महापद पायो ॥ चरणकमलकी सेवा दीजे । चेरो कर राखो घर जायो ॥१॥ बल छल बांध पाताल पठायो । हरि यशुमतिकें आप बंधायो ॥ कंचन लंक विभिषण दीनी । हरि गोरसको दान लगायो ॥२॥ जे नर विमुख भये गोविंदसों । जन्म जन्म बहुते दुख पायो ॥ श्रीभटके प्रभु दियो अभय पद । यम डरप्यो तब दास कहायो ॥३॥ ॥१०७॥

कृष्ण श्रीकृष्ण शरणं मम उच्चरे ॥ रेन दिन नित्यप्रति । सदा पल छिन घडी । करत विध्वंस । जन अखिल अघ परिहरे ॥१॥ होत हरिरूप । व्रजभूप भावे सदा । अगम भव सिंधुकुं । विना

साधन तरे ॥ रहत निशि दिवस आनंद उरमें भर्यो । पुष्टि लीला सकल सार उरमें धरें ॥२॥ रमा अज शेष । सनकादि शुक शारदा । व्यास नारद रटें । पलक मुख ना टरें ॥ लाल गिरिधरनकी महिमा अतुल जगमगी । शरण कृष्णदास निगम नेति नेति करे ॥३॥१०८॥

× कृष्ण श्रीकृष्ण मन माहिं गति जानिये ॥ देह इंद्रिय प्राण दारागारादि वित्त आत्मा सकल श्रीकृष्णकी मानिये ॥१॥ कृष्ण मम स्वामि हों दास मन वच करम कृष्ण कर्त्ता येही सदा जिय आनिये ॥ कृष्णदासनी नाथ हरिदासवर्यधरचरणरज वल्लभाधीश मन सानिये ॥२॥ १०९॥

और कोऊ समझो । सो समझो । हमकुं इतनी समझ भली ॥ ठाकुर नंदकिशोर हमारे । ठकुरायन वृषभान लली ॥१॥ श्रीदामा आदि सखा श्यामके । श्यामा संग ललितादि अली ॥ व्रजपुरवास शैल वन विहरत कुंजन कुंजन रंग रली ॥ २ ॥

इनके लाड चाहूं सुख सेवाभाव वेल रस फलन फली॥ कहे भगवान हित्त रामराय प्रभु सबनतें इनकी कृपा भली ॥३॥ ११०॥

व्रजवासी जाने रसरीति॥ जिनके हृदय और नहीं आवत। नंदसुवन पद प्रीति॥१॥ सर्वभाव। सर्वात्मा॥ निवेदन। रहतहें त्रिगुणातीत॥ करत महलमें टहल निरंतर। जात याम युग वीत॥२॥ जिनकी गति और नहीं जाने। बीच जवनीका भीति॥ कोई एकलहे दास परमानंद। गुरु प्रसाद प्रतीती॥ ३॥ १११॥

आवत हें गोकुलके लोचन॥ नंदकिशोर। यशोदा नंदन। मदन गोपाल। विरह दुख मोचन॥१॥ गोपवृंदमें ऐसे सोभित। ज्यूं नक्षत्रमें पूरण चंद॥ वनजधातु गुंजामणिसकी भेष बन्यो हरि आनंद कंद॥ २॥ बरहामुकुट कंठ मणि माला। अद्भुत नटवर भेष हरि काछें॥ कुंडल लोल कपोल विराजत। मोहन वेणुं बजावत आछें॥३॥ भक्तवृंद पावन

यश गावत यह विधि व्रजप्रवेश हरि कीनो॥ परमानंद प्रभु चलत ललित गति यशुमति धाय उछंग हीं लीनो ॥ ४ ॥ ११२॥

गोपी प्रेमकी ध्वजा॥ जिन गोपाल कीयो अपने वश उर धर श्याम भुजा॥१॥ शुकमुनि व्यास प्रशंसा कीनी। ऊधो संत सराही॥ भूरिभाग्य गोकुलकी वनिता। अति पुनीत भव माही॥ २॥ कहा भयो जो विप्रकुल जन्म्यो। जेहें हरि सेवा नाईं॥ सोई कुलीन। दास परमानंद। जो हरि सन्मुख धाई ॥ ३॥ ११३॥

सेवा मदन गोपालकी मुक्तिहुंते मीठी॥ जाने रसिक उपासक। जिन शुकमुखहुंते दीठी॥१॥ चरणकमल रज मन वसी। सब धर्म वहाई॥ श्रवण कथन चिंतन बढ्यो। पावन यश गाई॥ २॥ वेद पुराण निरूपके। रस लियो निचोई॥ पान करत आनंद भयो डार्यो सब धोई॥ ३॥ परमानंद विचारके परमारथ साध्यो रामकृष्ण पद प्रेमसों लालच रस बांध्यो ४॥ ११४

अथ श्री विनतिके पद ॥ राग बिहाग ॥

गायो न गोपाल। मन लायो न निवार लाज।
पायो न प्रसाद साधु मंडलीमें जायके ।१
धायो न धामके वृंदाविपिनकी कुंजनमें। रह्यो
न शरण जाय श्री विठ्ठलेश रायके ॥१॥ श्री-
नाथजीकों देखके। छक्यो न छबिली छबि।
सिंघपोर पड्यो नाहिं शीश हूं नवायकें॥
कहे हरिदास। तो हि लाज हूं न आई। मानस
जन्म पायो। कमायो कहा आयके ॥२॥११५

गायो न गोपाल। मन लायो न रसाल लीला।
सुनी न सुबोधिनी। न साधुसंग पायो है॥ से-
व्यो न स्वाद करी। घडी आधी घडी हरि। क-
बहु न कृष्णनाम रसना रटायो है॥१॥ वल्लभ।
श्री विठ्ठलेश प्रभुकी शरण जाय। दीन होय
मति हीन। शीश न नमायो है॥ रसिक कहें।
वारवार। लाज हुं न आवे तो हि। मनुष्य जन्म
पायो। कहा ले कमायो है ॥२॥११६॥

कहो मन श्रीकृष्णशरणं ॥ ममके मिलें अधिक
अमृतसुख। ऐसें हैं दुखहरणं॥१॥ करो निवेदन। सुरत निपट कर। परमानंद करणं॥ सेवा
सावधान होय साधो। अंबर भोग आभरणं॥२॥
दीसत और कछू नहिं। कबहुं भवसागरतरणं
श्रीविठ्ठल गिरिधरनलालको। ग्रहो कमल
चरणं ॥३॥ ११७॥

अरे मन समज सोच विचार॥ भक्ति बिन भगवत दुर्लभ। कहत निगम पुकार॥१॥ साधुसंगति। डार पासा। फेर रसना सार॥ पडपासे बके दाव। पूरण जीत। भाखे हार॥२॥ ग्रंथ
सत्रें। सुन। अठारें। पांचही बूमार॥ बूरति त्यज।
तीन काने। चतुर चोक निहार॥३॥ कामक्रोध जंजाल भूल्यो। ठग्यो ठगनी नार॥ सूर
हरिके भजन विन। तूं चल्यो दोऊ कर झार॥
॥४॥११८॥

जबलग यमुना। गाय। गोवर्द्धन। जबलग
गोकुलगाम गुसांई॥ जबलग श्रीभागवत
कथारस। तबलग कलियुग नाहिं॥१॥ जब

लग सेवारस। नंदनंदनसों प्रीति लखाई॥
परमानंद तासों हरि क्रीडत। श्रीवल्लभचरण
जिनपाई ॥२॥ ११९ ॥

मोहि बल है दोऊ ठौरको ॥ एक भरोसो हरि
भक्तनको दूजो नंदकिशोरको॥१॥ मनसा
वाचा और कर्मणा नाहि भरोसो औरको॥
छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल वल्लभकुल
शिरमोरको॥२॥ १२०॥

मधुर ब्रजदेश बस मधुर कीनो ॥ मधुर गोकुलगाम। मधुर वल्लभनाम। मधुर विठ्ठल भजन दान दीनो॥१॥ मधुर गिरिधरन आदि
सप्त तनु। वेणुनाद सप्त रंध्रन। मधुर रूप
लीनो॥ मधुर फल फलित। अतिललित।
पद्मनाभ प्रभु मधुर अलि गावत सरस
रंग भीनो ॥२॥ १२१ ॥

कियो गोपालको सब होय॥ जो जाने पुरुषारथ अपनो अतिकर जूठो सोय ॥१॥ —

दुख सुख। लाभ अलाभ। सह जगत। नाहिन मरिये रोय॥ जो कछु लेख लिख्यो नंदनंदन। मेंट शके नहिं कोय॥२॥ उद्यम साधन। जंत्र मंत्र। ये सब डारो धोय॥ परमानंददास को ठाकुर चरणकमल चित पोय॥३॥१२२॥

यामें कहा घटेगो तेरो॥ नंदनंदन कर घरको ठाकुर आप होय रहो चेरो॥१॥ भली भई जो संपति वाढी बहुत कीयो घर घेरो॥ सुतवनिता बहु यूथ संकेले वैभव भयो घनेरो॥२॥ कहूं हरि कथा कहूं हरिसेवा कहूं भक्तनको डेरो॥ सूर समर्पण करो श्यामको यह साचो मत मेरो॥३॥ १२३॥

विनति करत मरत हो लाज॥ नख शिखलों मेरी यह देही है पापकी जहाज॥१॥ और पतित आवत न आंखनतर देखत अपनो साज॥ तिनो पन भरवार निवाहे तोऊन आयो वाज॥२॥ पाछे भयो न आगे व्हे हे सब पतितन शिरताज॥ नर्कहिं भजे नाम सुन मेरो· पीठ दई यमराज॥३॥ अबलों मै सुने जे तारे ते सब वृथा अकाज॥ साचो बिरद सूरके तारे लोकनि लोककी अंवाज॥४॥
॥१२४॥

तरेटी श्रीगोवर्द्धनकी रहिये॥ नित्यप्रति मदनगोपाल लालके चरणकमल चित्त लैये॥१॥ तन पुलकित व्रज रजमें लोटत। गोविंदकुंडमें नैये॥ रसिकप्रीतम हित चितकी वातें श्रीगिरिधारीजीसों कहियें॥ २॥१२५॥

॥श्रीभागवत स्तुतिके पद॥

नमो नमो श्रीभागवत पुराण॥ महातिमिर अज्ञान बढयो जब। प्रकट भये जग अद्भुत भान॥१॥ उदित सुभग श्रीशुक उदयाचल। छिपे ग्रंथ उडुगणन समान॥ जागे जीवं निशि सोये अविद्या। कीयो प्रकाश विमल विज्ञान॥२॥ फूले अंबुज वक्ता श्रोता। हिमकर मंद मदन अभिमान॥ छुट गये कर्मनके बंधन। मिट्यो मोह। सुजे सुस्थान॥३॥ दरस्यो भक्ति पंथ अनुरागी।

सूजे शब्दस्वरूप निदान॥ देखत नहि उलूक सकामी। यद्यपि दिनकर हैं विद्यमान॥४॥ राजत एक महा सर्वोपर बढयो प्रताप। और न समान॥ दामोदर हित सुर मुनि वंदित। जय। जय। जय। श्री कृपानिधान ॥५॥ १२६॥

॥ श्रीबलदेवजीके पद॥ राग बिलावल॥

मैया दाऊ बहुत खिजायो॥ मोसों कहत मोलको लीयो। तू जसुमति कब जायो॥१॥ कहा करों। यह रिसके मारें। खेलन हु नहीं जात॥ पुन पुन कहत। कोन है माता। कौन है तेरो तात॥२॥ गोरे नंद। यशोदा गोरी। तुम कित सांवल गात॥ चुटकी दे दे ग्वाल हसत हैं। हसत सखा किलकात॥३॥ तू मोहीको मारन शीखी। दाऊए कबहु न खीजे॥ मोहनकों मुख। रिस समेत। इह बातन सुन सुन रीझे॥४॥ सुनहु कान्हा। बलभद्र चबाऊ। जन्म तहीको धूत॥ सूर श्याम। मोही गोधनकी सों। मैं जननी तू पूत॥ ॥५॥ १२७॥

मैया निपट बुरो बलदाऊ॥ कहत है वन बडो तमासो। सब लरका जुर आऊ॥१॥ मोहूको चुचकार चले। ले जहां बहुत वन झाऊ॥ वहांहीते कहिं छांड चले। सब काठि खाउ रे हाऊ॥ ॥२॥ डरप कांपकें ऊठ ठाडो भयो। कोऊ न धीर धराऊ॥ पर पर गयो। चल्यो नहीं जाई। वे

भाजेजात अगाऊ ॥३॥ मोसो कहत मोलको
लीन्हों। आप कहावत साऊ॥ परमानंद बलराम
चवाई। तैसेई मिले सखाऊ॥४॥१२८॥

॥ राग सारंग ॥

खेलन अब मेरी जाय बलैया॥ जबही मोहि
देखत लरकन संग। तबही खीजत है बल
भैया ॥१॥ मोसों कहें। तात वसुदेव को। देवकी
तेरी मैया ॥ मोल लियो कछु दे। वसुदेवहि।
कर कर यत्न बढैया ॥२॥ अब बाबा कहत
नंद सों। यशुमति सों कहि मैया॥ ऐसे
कही तब मोही खीजावत। तब उठ चल्यो खिसैया॥३॥
पाछे नंद सुनत हैं ठाडे। हसत हसत।
उर लैया॥ सूर नंद बलराम हि खिजत।
या सुन हरख बढैया ॥४॥१२९॥

देखरी रोहणी मैया। कैसें हैं बलदाऊ भैया॥
यमुनाके तीर। मोहि झुझुवावत योरी ॥
सुबल श्रीदामा साथ। हस हस बूझत वात॥
आपडरपें। ओर मोही डरपायोरी ॥१॥

जहीं जहीं बोले मोर। चिते रहत ताही ओर॥
भाजो रे भाजो रे भैया वह देखो आयो ॥
आप गये तरु चढ। मोहि छोड्यो याहीतर॥
घर घर छाती कर। दोर्यो घर आयो ॥२॥
उछंग सो लिये लगाय। कंठ सों रहे लपटाय॥
वारी रे वारी। मेरो हीयो भर आयो॥ परमानंद
रानी। द्विज बुलाय। वेद मंत्र पढाय। बछिया
की पूछ ग्रहि। हाथहि दिवायो॥३॥१३०॥

॥श्रीमद्वल्लभाचार्यजीकेपद॥ रागभैरव॥

प्रात समय उठ करिये श्रीलक्ष्मण सुत गान॥
प्रकट भये श्रीवल्लभ प्रभु देत भक्ति दान॥१॥
श्रीविठ्ठलेश महाप्रभु रूपके निधान॥ श्रीगिरिधर
श्रीगिरिधर उदय भयो भान॥२॥ श्री
गोविंद आनंद कंद कहा वरणो गुण गान॥
श्रीबालकृष्ण बालकेलि रूपही सुहान॥३॥
श्रीगोकुलनाथ प्रकट कीयो मारग वखाण॥
श्रीरघुनाथलाल देख मन्मथही लजान॥४॥
श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरण भगवान॥ श्रीघन
श्याम पूरणकाम पोथीमें ध्यान॥५॥ माधुरंग
विठ्ठलेश करत वेद गान॥ परमानंद
निरख लीला थके सुर विमान॥६॥१३१॥

श्रीवल्लभ संतत सुयश नित उठ गाऊं॥ मनक्रम
वचन। क्षण एको न विसराऊं॥१॥ श्रीपुरुषोत्तम
अवतार। सुकृत फल। जगत वंदन। श्री
विठ्ठलेश दुलराऊं॥ परस पद कमल रज।
निरख सुंदर निधि। प्रेम पुलकित। कलेश कोटिक
नशाऊं॥२॥ श्रीगिरिधर। देवपति मान

मर्दन करन। घोख रक्षक। सुखद लीला सुनाऊं॥
श्रीगोविंद। ग्वाल संग। गाय के चलतवन।
विशद अंबुज हाथ। शिर पर शाऊं॥३॥ श्री
बालकृष्ण। [illegible] बालक दशा। कमललोचन।
रंग [illegible] बढाऊं॥ भक्तिमारग प्रकट करण।
गुणराशि व्रजमंडल। श्रीगोकुलनाथ लडाऊं॥४॥
श्रीरघुनाथ धर्मधीर। शोभा सिंधु।
दुख दूर वहाऊं॥ पतित उद्धारण महाराज।
श्रीयदुनाथ। रसना चातक ज्यूं रटाऊं॥५॥
श्रीघनश्याम। रूप अभिराम। रसिक रस निरख।
नयन सिराऊं॥ चतुर्भुजदास परयो
द्वारे। प्रणपति करें। श्रीवल्लभकुल चरणामृत।
भोर उठ पाऊं॥६॥१३२॥

भोर भये भावसीं के श्रीवल्लभ नाम हे
रसना तूं और वृथा बके क्यो निकाम
सेवा रस स्वाद पावें निशदिन गुण
गावें और सब विसरावें यह मन आठो
याम १ रसीकन कछु और करें इन
हीमें भाव धरें अति रसें अनुपान करें

ओरकपट वाम हरि वश छिनहीमें होत
सगरो भक्तिमारग रूप हृदयवसें अरू रस
समूह धाम २

अहं हरे तव पादैक मूल दासानुदासो भविताऽस्मि भूयः
मनः स्मरेता सुपतेर्गुणानां गृणीत वाक्कर्म करोतु कायः १

હે ભગવાન! હું ફરી પણ તમારા ચરણના એક દાસનો દાસ થાઉં, મારું મન તમો પ્રાણજીવનના ગુણોનું સ્મરણ કરે, વાણી તમારા સદ્‌ગુણોનુ કીર્તન કરે અને કાયા તમારી સેવા કરે, એટલું માગી લઉં છું. ૧

न नाक पृष्ठं नच पारमेष्ठयं न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम्
न योग सिद्धी रपुनर्भवं वा समञ्जस त्वा विरहय्य काङ्क्षे २

હે સંપૂર્ણ સૌભાગ્યના ભંડાર! તમારો વિયોગ કરાવનારાં સ્વર્ગને, બ્રહ્માના સ્થાનને, ચક્રવર્તીપણાને, પાતાળના રાજ્યને અણીમાદિક સિદ્ધીઓને અથવા તો મોક્ષને પણ હું ઈચ્છતો નથી અર્થાત્ તમારા ચરણ શરણનીજ વાંછા કરૂં છું ૨

अजात पक्षा इव मातरं खगाः स्तन्यं यथा वत्सराः क्षुधार्ताः
प्रियं प्रियेव व्युषितं विषण्णा मनोऽरविन्दाक्ष दिदृक्षते त्वाम् ३

જેઓને પાંખો આવી નહોય એવાં પક્ષીઓનાં બચ્ચાંઓ જેમ માને ~~એવા~~ જોવાને ટમટમી રહે છે. ભૂખથી પીડાતાં વાછરડાંઓ જેમ દૂધની વાટ જોઈને બેસી રહે છે. તથા મિત્ર થએલી સ્ત્રી જેમ પરદેશ ગએલા પોતાના પ્રાણપતિને જોવાની ઈચ્છા કરે છે, તેમજ હે કમલનયન! મારૂં મન તમારાં દર્શન કરવા માટે આતુર રહે છે. ૩

ममोत्तम श्लोक जनेषु सख्यं संसार चक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः
त्वन्मायया त्मात्मज दार गेहेष्वासक्तचित्तस्य ननाथ भूयात् ४

હે નાથ! મારા પોતાનાં કર્મોવડે આ સંસાર ચક્રમાં ભટકતાં મને ભગવાનના ભકતોની સાથે મિત્રતા થાઓ તથા તમારી માયાવડે દેહ તથા તેની પાછળની સેનાતરિકે ગણાતાં પુત્રો, સ્ત્રીઓ તથા ઘર ઉપર મારૂં ચિત્ત કે જે આસક્ત થએલું છે તે ફરીને તેના ઉપર આસક્ત ન થાઓ આ મારી પ્રાર્થના છે ૪

श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ ध्याऊं नाम लेत अति मन सुंचु पाऊं १
श्रीवल्लभ त्यज अनत न ध्याऊं ओर काज मनमें न लाऊं २
श्रीवल्लभ त्यज अंनत न जाऊं चरण सरोज मूल घर छाऊं ३
श्रीवल्लभहीके गुण गाऊं रूप निरख नयनन अघाऊं ४
श्रीवल्लभके मन जो भाऊं आनंद फूल्यो मन न समाऊं ५
श्रीवल्लभकों गाऊं भाऊं यशोमति सुतको लाड लडाऊं ६
श्रीवल्लभके चरण रहाऊं भूखें महासुख भोजन विसराऊं ७
श्रीवल्लभको दास कहाऊं रसिक सदा यह नेह निभाऊं ८

जय जय जय श्रीवल्लभ प्रभु विठ्ठलेश साथे